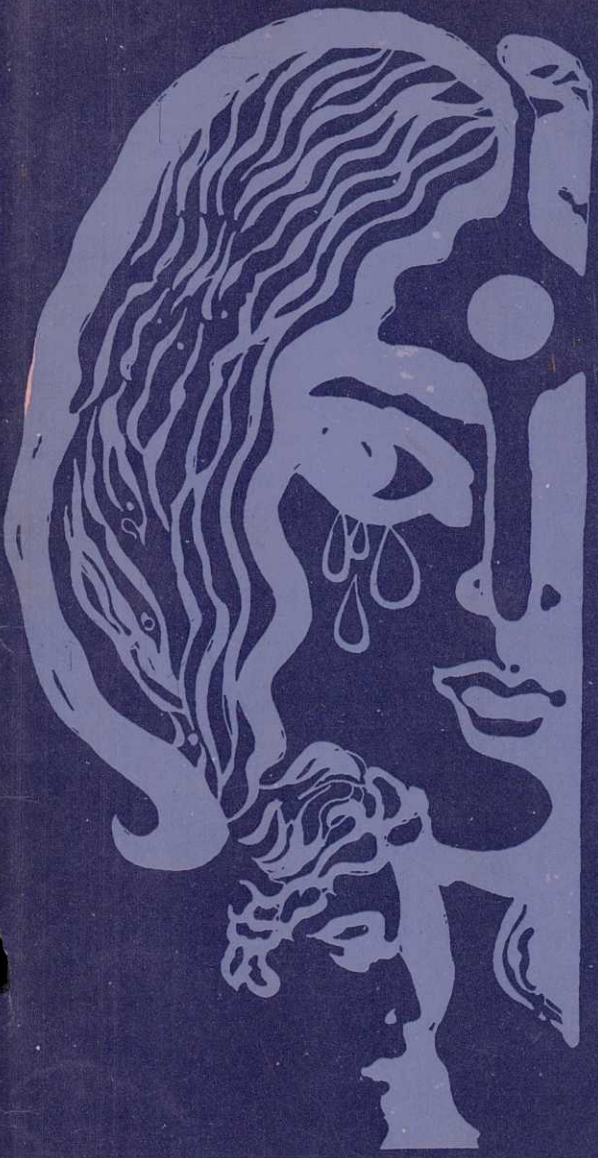

जीने की चाह

डा. मृदुला सेठ

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ, नयी दिल्ली

जीने की चाह

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
नयी दिल्ली-110002

जीने की चाह

डा० मृदुला सेठ

प्रकाशक :
भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
शफीक मेमोरियल
17-बी, इन्द्रप्रस्थ एस्टेट
नयी दिल्ली-110 002

© भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
पहला संस्करण 1992 : मूल्य : 10.00

मुद्रक :
त्यागी प्रिंटिंग प्रेस
त्रिलोकपुरी
दिल्ली-110091

निवेदन

मृदुला सेठ जानी-पहचानी लेखिका हैं और उन्होंने अपनी सशक्त लेखनी द्वारा मानव जीवन के विविध पहलुओं को छूते हुए समाज में व्याप्त बुराइयों की ओर न केवल ध्यान आकृष्ट किया है वरन इसे दूर करने के सार्थक सुझाव दिए हैं।

उनकी कहानियां हमने अपनी मासिक पत्रिका प्रौढ़ शिक्षा में प्रकाशित की थीं। परिवार नियोजन, स्वास्थ्य, बाल विवाह, प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र, पत्नी का सम्मान, स्वव्यवसाय आदि अनेक पहलुओं पर प्रौढ़ों व नवसाक्षरों के लिए शिक्षाप्रद एवं उपयोगी रचनाओं को पुस्तकाकार रूप में प्रकाशित करते हुए हमें प्रसन्नता है।

आशा है कि हमारे पाठक भी इन्हें रुचि से पढ़ेंगे और अपनी प्रतिक्रिया में हमें अवगत कराएंगे।

—कैलाश चौधरी
(महासचिव)

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
नयी दिल्ली-110002
18 जून 1992

जीने की चाह

जीने की चाह

माया आज उदास है। उसकी सहेली सरोज आज ससुराल जा रही है और वह बहुत खुश है। माया का मन भी अपने ससुराल जाने को तड़प रहा है, लेकिन उसके ससुराल वाले उसे बुलाते ही नहीं। तीन वर्ष बीत गए शादी को और अभी तक वह मां के घर ही बैठी है। मां स्वयं भैया-भाभी के घर खुश नहीं है, लेकिन क्या करे। मां-बेटी भाई-भाभी के ताने सुनकर चुप रह जाती हैं। माया के दोनों भाईयों की शादी दो बहनों से हुई है—बीना और सुषमा। दोनों परिवारों में बिल्कुल प्यार नहीं है। बड़ा भाई मथुरा सरकारी नौकर है और छोटा भाई सुभाष बढ़ई का काम जानता है, लेकिन आज तक जिम्मेदारी से कोई काम नहीं किया। मां और माया मथुरा के पास ही रहती हैं।

माया को पता चला कि उसके ससुराल वाले उसके पति का विवाह दोबारा करना चाहते हैं। उससे चुप न रहा गया। भाई के सामने जाकर गिड़गिड़ाई कि उसे ससुराल छोड़ आए, लेकिन भाई न माना। मामा के हाथ ससुराल संदेश भिजवाया कि लड़की को ले जाएं। लेकिन कोई लेने न आया। हार कर मां-बेटी ने फैसला किया कि सब शर्म छोड़कर स्वयं वहां जाएंगी। और फिर एक दिन बिना मथुरा को बताये चुपचाप चल दीं। परदेश में किसी अनजाने का स्वागत करना गांव वालों की परम्परा है, लेकिन माया के ससुराल वालों ने तो मां बेटी के लिए घर का दरवाजा भी नहीं खोला। बेचारी शर्मिंदा होकर गांव लौट आयीं। दोनों बेटों ने मां को डांटा और बुरा-भला कहा। उन्होंने दोष अपनी बहन में ही देखा जिसके कारण उसे अपने ससुराल में मान नहीं मिला। आदमियों के बिना मां-बेटी का दूसरे गांव जाना उन्हें बिलकुल पसन्द नहीं आया।

ससुराल से पीहर आकर माया ने आत्महत्या करने की ठानी। वह दोबारा शादी भी नहीं करना चाहती थी, लेकिन उसके विचार में लड़की का जीवन शादी के बिना बिताना भी तो कठिन है। भाई भाभी के घर में बोझ बनकर भी नहीं रहना चाहती थी। पांच कक्षा तक पढ़ी थी और सिलाई भी जानती थी, लेकिन अलग रहने की हिम्मत नहीं थी। बेचारी सोच में डूब गई कि क्या करे–

भविष्य में अंधेरा ही अंधेरा था !.....आत्महत्या के सिवा कोई रास्ता न दिखाई देता था। दीवारों से सिर पटक-पटक कर खून-खून हो गई। खाना-पीना छोड़ दिया। रोती ही रहती थी। उसकी मां सेंटर में बहन जी के पास आकर रोई और प्रार्थना की कि वे माया को समझायें।

बहन जी माया के घर गईं तो उन्हें देखकर वह फूट-फूटकर रोने लगी। बहन जी ने उसे प्यार से समझाया कि जीवन बहुत अनमोल है। ऊपर वाला जीवन में कई उतार चढ़ाव लाता है लेकिन हिम्मत नहीं हारनी चाहिए। उन्होंने समझाया कि आत्महत्या तो कायरता की निशानी है। जीवन जीने के लिए बना है और समझदारी से काम लेना चाहिए। बहन जी ने माया की राय जानने की कोशिश की। उसने प्रार्थना की कि किसी भी तरह उसे उसके ससुराल छोड़ आएं।

बहन जी और शहर की कुछ समाज-सेविकाओं ने सेंटर की औरतों को बुलाकर उनकी राय ली। सबने सुझाव दिया कि माया के भाई यदि उसे ससुराल नहीं ले जाना चाहते तो हमें उसे बसाने का उपाय सोचना चाहिए और कोई राह निकालनी चाहिए। यह फैसला किया गया कि माया के भाई को साथ लेकर एक बार जाना चाहिए। उन्होंने भाई को चलने के लिए राजी कर लिया। एक दिन सब माया के ससुराल पहुंच गए। जाने से पहले उन्हें पत्र लिखकर आने की तारीख बता दी थी। माया नहीं गई। गांव में माया के ससुर सबसे अच्छी तरह मिले। शहर से

आए मेहमानों का स्वागत किया और अच्छी तरह बातें कीं। और फिर यह भी कहा कि वह माया को इसलिए घर नहीं बुलवाना चाहते थे क्योंकि वह बोलती बहुत है, काम नहीं करती, सोती अधिक है वगैरह-वगैरह .....एक तरह से यह उनकी शिकायतें थीं। उन्हें नम्रता से कहा गया कि उसकी उम्र अभी छोटी है। यदि कोई गलती हो गई हो तो उसे माफ कर देना चाहिए। वो लोग तो कुछ सुनने को तैयार हो नहीं थे। बहुत समझाया गया कि उसे एक मौका और दे दें, लेकिन सास ससुर तो जैसे कुछ सुनने को ही तैयार न थे। एक बूढ़ी औरत ने मथुरा से कहा, "उसे कहो कुछ कमाकर गुजर कर ले। तेरे घर पड़ी रहेगी, क्या बुराई है!" भाई को बुरा जरूर लगा लेकिन शहर से आई औरतों को बहुत दुःख पहुंचा और उनके मन में माया की ओर से लड़ने की भावना और भी दृढ़ हो गई। उन्होंने ससुर से कहा कि माया के रहते उसका पति दूसरा विवाह नहीं कर सकता। इस पर उनके मन की बात प्रकट हो गई। उनमें से एक आदमी जोर से बोला, "हमारे गांव में कई आदमी दूसरा विवाह करते हैं। हम भी इस का विवाह करके ही रहेंगे।" इस पर भाई मथुरा अपने आप पर काबू खो बैठा और ऊंचा-ऊंचा बोलने लगा। शहरी औरतों ने अपना संयम नहीं खोया, किंतु दृढ़ निश्चय से उन लोगों को कहा कि वह माया के पति को पुनः विवाह नहीं करने देंगे। बिना कुछ फैसला किये सब वापस लौट आये।

माया के ससुर शहरी धमकियों से कुछ डर गए और उन्होंने माया को बुला लिया। माया खुशी-खुशी ससुराल गई। जब बहन जी उससे मिलने गईं तो उनके पैर छूकर रोते हुए बोली, "आपने मेरी लाज रख ली !"

कुछ सप्ताह बाद एक दिन अचानक माया अपने पीहर आ गई। उसके बदन पर मारने के निशान पड़े हुए थे और सारा बदन दर्द से पस्त था। उसने अपनी व्यथा बहन जी को सुनाई। कोमल माया कुछ ही सप्ताह में जसे मुरझा गई थी लेकिन उसमें बहुत आत्मविश्वास आ गया था। वह अब लड़ना चाहती थी और ससुराल वालों से अपना हक मांगने के लिए तैयार थी। वह पीहर के गांव में नहीं रहना चाहती थी और ससुराल में अकेले कमाकर अपने पैरों पर खड़ी होना चाहती थी। उस पर जो कुछ बीता उसे सुनकर बहन जी भी हैरान और दुःखी थीं।

माया ने बताया कि उसके सास, ससुर और पति 'घेर' (बाहरी घर) में सोते थे और उसे अकेले घर में सोना पड़ता था। एक दिन किसी आदमी को भी घर के अन्दर भेजा गया, जब वह अकेली थी। ससुराल वाले किसी भी तरह लांछित करना चाहते थे और तंग करते थे, ताकि वह घर छोड़कर चली जाए। माया ने बताया कि एक दिन उसके पति को देखने लड़की वाले उनके घर आ रहे थे। सास ने माया से अपने पहनने के लिए साड़ी मांगी और कुछ बनाने को कहा। माया ने गुस्से में सास को

बहुत कुछ कह दिया। उसने अपने सिर पर फोड़े दिखाये जिन पर इलाज न करने के कारण और ऊपर से बाजरा लाने से जख्म हो गए थे। सास सिर पर कम बाजरा लाने पर ताना देती, "खाती तो तीन के बराबर है लेकिन काम नहीं किया जाता।" माया अब ससुराल जाने को तैयार न थी पर अपना हक चाहती थी।

कानूनी कार्यवाही की गई और माया की ओर से अदालत में अर्जी दी गई। इस बीच उसके पैर भी भारी हो गए और उसे अपने और होने वाले बच्चे के हक के लिए लड़ने की सलाह दी गई। कचहरी में दो बार माया के ससुर, पति और मामा आये और बहुत परेशान हो गए। जमींदारों के लिए एक-दो लोगों की रोटी निकालनी मुश्किल नहीं लेकिन हर महीने एक बंधी हुई निश्चित रकम देना मुश्किल है। बहन जी और शहरी सेविकाओं ने किसी तरह दोनों पक्षों का समझौता करवा दिया और माया को घर ले जाने के लिए उसके ससुराल वाले तैयार हो गए।

कुछ दिनों बाद माया ने एक बेटे को जन्म दिया।

माया का पति भी बाप का इकलौता बेटा है। सुरेश के घर बेटा होने से दादा दादी और पिता की खुशी का ठिकाना न रहा। उनके लिए माया के सभी अवगुण जैसे छिप गए—उसने उन्हें बेटा दे दिया, जिसके कारण सभी जुड़ गए।

आप निम्न प्रश्नों पर विचार करें–

1. बिना आदमियों को साथ लिए लड़की के ससुराल जाना क्या औरतों के लिए सही है ?

2. यदि किसी विवाहित स्त्री को उसका पति घर न बुलाये, तो उसे क्या करना चाहिए ?

3. घर के मामलों को निबटाने के लिए क्या बाहर वालों को हस्तक्षेप (दखल) करना चाहिए या नहीं ?

4. एक पत्नी के रहते क्या कोई पुरुष दोबारा विवाह कर सकता है ? यदि हां, तो किस स्थिति में ? यदि नहीं तो पुनः विवाह करने पर क्या कानूनी कार्यवाही की जा सकती है ?

5. भाग्य को दोष न देकर लड़कियां अपना जीवन स्वयं कैसे मोड़ सकती हैं ?

6. एक विवाहित स्त्री को कानूनी तौर पर अलग रहने के लिए उसके और उसके बच्चे के लिए पति को हर महीने गुजारा भत्ता देना पड़ता है। क्या इससे बचने के लिए ससुराल वाले लड़की को घर में रखने को तैयार हो जाते हैं ?

खुशी

धौला और लक्ष्मी दो बहनें—जिन्हें बचपन में भाई न होने की कमी महसूस न हुई थी। मां-बाप ने उन्हें बहुत प्यार से पाला। उन दोनों का विवाह एक ही गांव में करके वे निश्चिंत हो गए। शादी के बाद जब भी कोई त्योहार आता, ससुराल वाले उन्हें भाई के न होने पर अफसोस जताते। जब धौला मां बनने वाली थी तो वह आशा करती थी कि उसका बेटा होगा लेकिन बेटी हुई। घर में खुशी नहीं मनाई गई।

गांव में उनके माता-पिता की जमीन बिकी तो उसके हाथ में कुछ पैसा आया। धौला का पति कहने लगा कि मां-बाप को चाहिए कि लड़कियों का हिस्सा उन्हें दे दें। बेटा न होने पर जायदाद बेटियों को ही मिलती है। वह

धौला को बार-बार बाप से पैसा मांगने को कहता। धौला अपने पिता जी से पैसा नहीं मांगना चाहती थी। जितना अधिक पति जोर डालता, उतना ही धौला का मन पक्का होता कि वह पिता के आगे हाथ नहीं पसारेगी। जब प्यार से बात नहीं बनी तो धौला के पति ने उसे पीटना शुरू किया। उसकी मां भी बेटे के साथ थी। धौला किसी से कुछ न कहती। बहन को भी मना किया था कि पिताजी को न बताये। बहन से न रहा गया। जब वह पीहर गई तो उसने धौला के बारे में मां-बाप को बता दिया।

एक दिन पिता जी धौला से मिलने उसके ससुराल गए। उसका पति उसे पीट रहा था। कौन सा बाप अपनी बेटी को पिटते देख सकता है ? बेटी को बचाना चाहा तो उसको भी मार पड़ गई। धौला अपने पिता का अपमान और पिटना न देख सकी। पिता के साथ पीहर आ गई। घर आते समय पिता पुलिस चौकी में रिपोर्ट लिखवाकर आए। बाप बेटी को मार पड़ी थी और वह साफ दिखाई दे रहा था। धौला के पति और सास को बहुत गुस्सा आया और उन्होंने फैसला किया कि उसे घर में नहीं रखेंगे।

धौला को बाप के घर आए दो बर्ष बीत गए। बेटी बड़ी हो रही थी। गांव में सब लोग पूछने लगे कि उसका पति उसे लेने क्यों नहीं आता। जोश में आकर पति का घर छोड़ा था। यह तो कभी सोचा न था कि ससुराल हमेशा के

लिए छूट जाएगी। जैसे-जैसे समय गुजर रहा था, धौला का ससुराल जाने को मन अधिक कर रहा था। बाप के घर बेटी बिवाह के बाद अच्छी भी नहीं लगती–यह सोचकर मां-बाप भी उसे वापस भेजना चाहते थे।

एक दिन उन्हें खबर मिली कि धौला का पति दूसरी शादी करने वाला है। घर में सब लोग बहुत परेशान हुए। क्या करना चाहिए? सबकी सलाह अलग थी। कोई कहता कि कानूनी कार्यवाही की जाय–पहली पत्नी होते वह विवाह नहीं कर सकता। कोई समझौते की सलाह देता।

गांव में महिला मंडल में चर्चा हुई। बहन जी से धौला की मां ने रोते हुए प्रार्थना की कि वह कुछ उपाय सोचें। पिता जी चाहते हुए भी उसके ससुराल जाने में झिझकते थे। किस मुंह से जाकर दामाद को मनाते, जब स्वयं उसकी रिपोर्ट लिखवाई थी। ससुराल वाले तो अपनी शान में अड़े थे।

बहन जी कुछ महिलाओं को लेकर धौला के ससुराल गईं। बहुत प्यार से उसकी सास जेठानी और अन्य महिलाओं से मिलीं। धौला का पति घर पर नहीं था, पर पता चला कि वह मां को बहुत मानता था। मां बड़े गर्व से बता रही थी कि जो भी फैसला वह करेगी उसका बेटा उसे टालेगा नहीं।

दो वर्ष बीतने पर दोनों ही पक्ष आपस में समझौता

करना चाहते थे। बहन जी ने गड़े मुर्दों को नहीं उखाड़ा। पुरानी बातों की चर्चा नहीं की। किसी पर दोष लगाना उचित नहीं समझा। बहुत नम्रता से प्रार्थना की कि दादी अपनी पोती को घर बुला लें। जब भी पुरानी बातों की चर्चा होने लगती, बहन जी कहतीं—"अब जो हो गया सो हो गया, आगे की सोचो"। दो घंटे बैठकर वहां बातें हुईं। फैसला हुआ कि धौला को वापस बुला लेंगे। सास कहने लगी कि उसे छोड़ जाओ। उसे समझाया गया कि गांव में सब लोग उसे दो वर्ष से पीहर में देख रहे हैं। यदि ससुराल से उसे कोई लेने नहीं आए तो इसमें उसकी इज्जत घटती है। सास को लालच दिया कि बेटी की सही बिदाई होगी, और उन्हें सम्मान-पूर्वक भेजा जायेगा। सास मान गई।

अगले दिन ही धौला का पति और ससुराल के कुछ लोग उसे लेने आए। उनकी अच्छी आवभगत हुई। बेटी अपने पिता से मिलकर फूली नहीं समाई।

कुछ दिन बाद एक दिन धौला कुछ लोगों को लेकर बहन जी के घर सुबह-सुबह पहुंच गई। बहन जी का दिल उसे देखकर घबरा गया—सब ठीक तो है? धौला मुस्करा रही थी। आंखों में चमक थी। उसने अपने ससुराल के लोगों से मिलवाया। एक अधेड़ व्यक्ति ने प्रार्थना की कि उसकी बेटी तीन साल से पीहर में बैठी है। धौला की सफलता देखकर उन्हें भी आशा हो गई कि उसकी

बेटी भी अपने ससुराल में बस सकती है। क्या बहन जी मदद करेंगी ? बहन जी कुछ बोली नहीं। धौला की ओर देखा। उसकी आंखों की खुशी और सन्तोष देखकर मुस्कराईं और अपनी तरफ से कोशिश करने को तैयार हो गईं !

आप निम्न प्रश्नों पर विचार करें :–

1. मां-बाप को अपने जीते-जी बच्चों में जायदाद बांट देनी चाहिए या नहीं ?

2. पति को खुश करने के लिए औरत को अपने मां-बाप से पैसे मांगने चाहिए या नहीं ?

3. बाप को बेटी की जिन्दगी में दखल देना चाहिए या नहीं ?

4. बहन जी ने जो कुछ किया, क्या वह सही था ?

5. पति यदि पत्नी के होते विवाह कर ले और उसका बच्चा भी हो तो औरत के कानूनी अधिकार क्या हैं ?

जीत

सुशीला मां-बाप की लाडली बेटी थी। चार भाइयों की इकलौती बहन थी। बेटों की तरह ही मां-बाप ने उसे भी गांव के स्कूल भेजा। आठवीं की परीक्षा पास करने के बाद उसे आगे नहीं पढ़ाया क्योंकि गांव में लड़कियों का स्कूल आठवीं तक ही था।

सुशीला शांत स्वभाव की थी और घर में मां का हाथ बंटाती थी। पड़ोस के गांव से उसके लिए बहुत अच्छा रिश्ता आया। लड़का पढ़ा-लिखा था और नौकरी करता था। उसके मां-बाप बहुत नेक थे। अपना घर, गाय, भैंस थी और घर में किसी चीज की कमी न थी। लड़के की एक बहन की शादी सुशीला के गांव में ही हुई थी और एक छोटी बहन कुंवारी थी। एक भाई स्कूल में पढ़ता था।

लड़के को केवल एक ही गुण लड़की में चाहिए था– पढ़ी-लिखी लड़की हो ! सुशीला के ताऊ जी ने लड़की का रिश्ता अच्छे घर में करवाने के लिए थोड़ा झूठ बोलने में कोई बुराई न देखी। यह जानकर कि लड़का पढ़ी-लिखी पत्नी चाहता है, उन्होंने कह दिया कि लड़की दसवीं पास है। शादी पक्की हो गई और इस बात का सुशीला को पता भी न था कि उसके ताऊ जी ने ऐसा कहा है। बहुत धूमधाम से शादी हुई और बहू घर आ गई। सब बहुत खुश थे और सुशीला का मन ससुराल में लग गया। कुछ महीने बाद पीहर जाने लगी तो बातों-बातों में उसके पति ने उसकी पढ़ाई की बात की। जब उसे पता चला कि वास्तव में वह आठवीं पास है, दसवीं नहीं तो वह बहुत क्रोधित हुआ और कहने लगा कि उसके साथ धोखा हुआ है। परिवार के सभी सदस्यों के प्रति उनका मन खट्टा हो गया। उसने किसी से कुछ न कहा पर चुपचाप रहने लगा।

सुशीला को अपने पीहर गए तीन महीने हो गए लेकिन ससुराल से कोई खबर ही न आई। उसका पति नरेश उसे घर लाना नहीं चाहता था। जब भी उसके परिवार के लोग सुशीला की बात करते वह चिढ़ जाता। उसने घर आना भी बन्द कर दिया। घर में सब लोग बहुत परेशान रहने लगे।

एक दिन सुशीला के पिता जी, ताऊ जी और भाई उसके ससुराल आये। वे कहने लगे कि शादी के बाद लड़की

का घर ससुराल होता है, इसलिए उसे बुलवा लें। नरेश के माता-पिता कहने लगे कि जब तक उनका बेटा न माने वे सुशीला को कैसे ला सकते हैं। लड़के ने तो घर आना ही बन्द कर दिया था। नरेश के माता-पिता बहुत नेक थे और उन्हें सुशीला से कोई शिकायत न थी। नरेश की बहनें भी बहुत परेशान थीं, विशेषकर जिसका विवाह सुशीला के पीहर के गांव में हुआ था। सब ने समझाया कि सुशीला पत्राचार विद्यालय से दसवीं की परीक्षा भी दे देगी, लेकिन नरेश तो कुछ सुनने को तैयार ही न था।

सुशीला के परिवार के लोगों ने सलाह दी कि यदि नरेश उसे वापस नहीं बुलाना चाहता तो उसकी शादी नरेश के छोटे भाई से कर दी जाए ताकि घर की इज्जत घर में रहे। नरेश की मां इसके लिए बिल्कुल भी राजी न थी, क्योंकि उसकी उम्र छोटी थी और वह स्कूल में पढ़ता था।

एक दिन सुशीला के पिता जी गांव की पंचायत के लोगों को लेकर उसके ससुराल आये। दोनों गांवों की पंचायतों के सदस्यों ने मिलकर बैठक की। नरेश को बुलाया गया। वह सुशीला को वापस लाने को राजी हो गया। सब लोग बहुत खुश हुए। अगले दिन वह जाकर उसे ले आया। कुछ दिन आराम से निकले।

अचानक नरेश को पता नहीं क्या हुआ ?—उसने घर आना बन्द कर दिया। शहर में एक कमरा लेकर रहने

लगा। रिश्तेदारों ने समझाया, लेकिन वह उन लोगों से मिलना ही नहीं चाहता था। सुशीला पहले की तरह शांत रहती और सास-ससुर की सेवा करती। सब को उस पर बहुत तरस आता, लेकिन कोई कुछ कर न सकता था। आठ महीने बीत गए और नरेश घर आया ही नहीं। हार कर सास ने बहू को पीहर जाने की सलाह दी, लेकिन इस बार तो वह ससुराल छोड़कर जाना ही नहीं चाहती थी। उसे डर था कि यदि वह चली गई तो शायद उसे वापस बुलाएं ही नहीं। अपनी परेशानी वह किसी से न कहती। उसके मां-बाप भी उसे वापस बुलाने को तैयार न थे। उनके लिए बेटी की जगह ससुराल में है—खुश हो या दुःखी उसे वहीं रहना चाहिए।

नरेश के माता-पिता बहुत परेशान थे। घर में सुशील बेटी जैसी बहू का दुःख उनसे देखा नहीं जाता था। अभी तक वे बेटे के साथ प्यार का व्यवहार कर रहे थे और समझाने की कोशिश कर रहे थे। उन्होंने फैसला किया कि सख्ती से काम लेंगे। बहू को अब घर से नहीं निकालना चाहते थे, लेकिन बेटे को कहलवा दिया कि यदि वह घर नहीं आए तो उसे जायदाद में हिस्सा नहीं मिलेगा।

अचानक नरेश का मन बदला और और एक दिन घर आ गया। सुशीला ने दसवीं की किताबें मंगवा ली थीं और स्वयं ही पढ़ती थी। वह पति का मन जीतना चाहती थी। उसमें आत्मबल और विश्वास था कि वह भूल का सुधार कर सकती है।

सपने

विवाह को सात वर्ष बीत गए पर गीता के कोई सन्तान न हुई। गांव के लोग उसे बांझ कहते। हंसमुख गीता लोगों के ताने सुनकर चुपचाप मन में सोचती कि इसमें उसका क्या दोष है ? उसकी बड़ी बहन का विवाह उसके जेठ से हुआ था। उसकी बहन पति और सास के डर से कभी गीता की तरफदारी न करती। कभी-कभी तो उनकी हां में हां मिलाकर बहन को अनजाने तंग भी करती।

गीता का पति बढ़ई का काम जानता था। वह बहुत ही मस्तमौजी आदमी था और कभी भी घर की जिम्मेदारी न समझता। दोनों भाइयों में जमीन-आसमान का फर्क था। मां बड़े बेटे के पास रहती और छोटे बेटे-बहू

में हमेशा दोष ही देखती।

जिस औरत का पति अच्छा न हो, सास और घर के लोग साथ न दें, तो उसकी जिन्दगी मुश्किल हो जाती है। ऊपर से समाज उसे ताने सुनाए तो उसे कैसा लगेगा? चंचल गीता बहुत दुःखी रहती थी। एक दिन गीता ने अपने ऊपर मिट्टी का तेल डालकर अपने जीवन को समाप्त करने का निश्चय किया। तेल को आग लगाने के लिए माचिस न मिली तो दो बोतलें तेल की पी डालीं। मौत तो न आई पर तबीयत बहुत खराब हो गई। दस्त और उल्टियों से उसका बुरा हाल था। जब उसे कुछ होश आया तो महसूस किया कि जान देना भी आसान नहीं है। उस दिन के बाद आत्महत्या करने का इरादा भी छोड़ दिया।

समय बीतता रहा। कुछ दिनों के बाद—

गीता ने गांव के महिला मंडल में जाना शुरू कर दिया। वहां बहन जी और दूसरी सदस्याओं से मिलकर गीता को बहुत अच्छा लगा। उसे महिला मंडल का प्रधान चुन लिया गया। गीता के चेहरे पर फिर से रौनक आ गई। उसकी खुशी तब और भी बढ़ गई जब उसे पता चला कि वह मां बनने वाली है।

फिर उसने एक बेटी को जन्म दिया। बच्ची काफी कमजोर थी। पति अब भी गैर जिम्मेदार था और बीवी-बच्चे की चिन्ता न करता। गीता भैंस का दूध बेचकर

और सिलाई करके किसी तरह पेट पालती। बेटी बीमार हुई तो डाक्टर ने सलाह दी कि उसे हस्पताल में दाखिल करे। गीता कहने लगी यदि वह घर छोड़कर बेटी के साथ हस्पताल जाएगी तो भैंस को कौन देखेगा? यही सोचकर उसने बेटी को हस्पताल में भर्ती नहीं कराया। मगर भगवान की दया से बेटी घर पर ही इलाज करवाने से ठीक हो गई।

अभी बेटी एक वर्ष की ही थी कि गीता के जुड़वा बच्चे पैदा हो गए—एक लड़का, एक लड़की। एक वर्ष बाद एक लड़का और हो गया। इस तरह चार वर्षों में उसके चार बच्चे हो गए। बहन जी ने उसे आपरेशन करवाने की सलाह दी लेकिन उसका पति न माना। उसने धमकी दी कि यदि गीता ने आपरेशन करवाया तो वह उसे छोड़ देगा। वह कहता कि चरित्रहीन औरतें आपरेशन करवाती हैं, ताकि उन्हें पूरी तरह छूट मिल जाय।

चाहते हुए भी गीता कुछ न कर पाती। एक वर्ष बाद उसका पांचवां बच्चा हुआ, जो मरा हुआ था। वह लड़का था इसलिए गीता बहुत रोई। बहन जी उसे देखने उसके घर गईं तो चारों बच्चे भूख से बिलख रहे थे। गरीबी के कारण गीता खुद बहुत कमजोर हो गई थी। बहुत समझाने पर उसने निश्चय किया कि पति से बिना पूछे ही वह आपरेशन करवा लेगी। कुछ सप्ताह बाद जब हिम्मत आयी तो बहन जी के साथ जाकर आपरेशन करवा

लिया। आपरेशन करवाने के 150 रुपये मिले तो साड़ी के कोने में बांध कर घर वापस आ गई।

अगले दिन पति घर नहीं आया और एक सप्ताह तक उसका पता भी नहीं चला। साड़ी के कोने से पैसे चुराकर वह परदेस घूमने चला गया। गीता अपना दुःख किसको कहती? कुछ दिनों के लिए भाई के घर गई तो घर वालों ने पीछे से घर का सामान, रेडियो, घड़ी वगैरह बेच दिये। वह भाई के घर चार बच्चों के साथ कितने दिन तक रहती, सो गीता अपने घर वापस आ गई।

गीता कभी अपने को लाचार मानती है तो कभी संकल्प करती है कि अपने जीवन को वह स्वयं ही एक नया मोड़ देगी। अब उसके चारों बच्चे बड़े हो रहे हैं और वह खिलौने बनाना सीख रही है। आमदनी का कुछ साधन होने से वह बच्चों को अच्छी तरह पाल सकेगी। गीता भविष्य के सपने देखती है। मुस्कराती है और अब वह मुश्किलों से लड़ना सीख गई है।

घर

पांच बच्चों की मां होते हुए घर में बिमला का सम्मान (इज्जत) नहीं था। उसकी शादी को 25 साल हो गए थे और अब तो पति के साथ-साथ उसके अपने बेटे भी उसे मारने लगे थे। जिस घर में पति अपनी स्त्री की इज्जत नहीं करता, वहां बेटे भी मां का आदर नहीं करते। उसकी बेटी मां की दशा देखकर बहुत उदास रहती, लेकिन बेचारी कुछ कर नहीं पाती। एक दिन जब उसके बाप ने मां को बहुत पीटकर बेहाल कर दिया, बेटी उसे सेंटर की बहन जी के पास ले गई।

बहन जी बिमला के मारपीट के बारे में पहले भी सुन चुकी थीं। कई बार बिमला पति की मार खाकर

अपने भाइयों के घर जाती और थोड़े दिनों में बच्चों का मोह उसे फिर वापस खींच लाता। भाभियां भी अधिक दिन तक उसे खुशी से न रख सकतीं। पिछली बार बहन जी ने बिमला को बहुत समझाया कि अपना घर छोड़कर औरत को कभी कहीं नहीं जाना चाहिए।

इस बार जब बिमला की बेटी अपनी मां को लेकर बहन जी के घर गई, उसकी हालत बहुत दयनीय थी। शरीर पर चोटों के अलावा उसकी मानसिक दशा भी खराब थी। बेहोशी में भी बार-बार कहती, "वह मुझे मार देगा, मैं वहां नहीं जाऊंगी।" बहन जी, जो कुछ दिन पहले ही उसे अपना घर न छोड़ने की सलाह देती थी, अब सोच में पड़ गई—बिना सम्मान पति के घर रहना क्या जरूरी है? लेकिन अब घर छोड़कर वह जाये कहां?

बिमला की स्थिति देखकर बहन जी और संस्था में उनके साथ काम करनेवाली सदस्यों ने फैसला किया कि उसके पति के खिलाफ कार्यवाही करनी चाहिए। औरत को उसके पैरों पर तो खड़ा करना ही था लेकिन उसके पति को भी सबक सिखाना था। मारपीट करने का हक तो किसी को भी नहीं है।

सेंटर के लोग बिमला को पुलिस थाने ले गए, जहां उसने अपने पति के खिलाफ रपट लिखाई। उसकी डाक्टरी जांच भी की गई। उसे संस्था की एक सदस्य अपने घर

ले गई, इलाज करवाने के लिए। पति को थाने में बुलाकर पिटाई की गई।

बिमला का पति गजेन्द्र जब थाने से बाहर आया तो गुस्से में आग-बबूला था—पत्नी के खिलाफ इतना नहीं था जितना कि बहन जी के। उन्होंने ही उसे इतनी हिम्मत दी थी कि वह घर से बाहर इस तरह निकल सकी। बदले की भावना में वह पागल हो गया था। वह तो जान लेने पर उतारू था।

ठीक होने के कुछ दिनों बाद बिमला अपने भाइयों के पास रहने चली गई। कुछ महीनों बाद बाप ने गांव में उसे अलग भैंस ले दी। बूढ़े बाप के पास रहते उसे अपने घर विशेषकर बेटी की याद आती है, लेकिन वह पति के घर नहीं जाना चाहती। वह अपने से बराबर यही सवाल करती है कि क्या पति के घर में ही स्त्री का रहना जरूरी है?

हिम्मत

जौनापुर गांव में सभी घर बीच में और खेत चारों ओर हैं। सिर्फ एक घर दूर खेतों के बीच में है। वहीं रहता है कल्लू और उसका परिवार। उसकी पत्नी के अतिरिक्त वहां रहते हैं उसके दो बेटे अपनी पत्नियों और बच्चों सहित। वहीं रहती है भगवती अपने दो बच्चों के साथ।

भगवती की छोटी उम्र में ही शादी हो गई। उसके दो बच्चे हुए और वह सुखी जीवन व्यतीत कर रही थी। पति बहुत अच्छा था। लेकिन भगवान को कुछ और ही मंजूर था। भगवती के पति की अचानक मृत्यु हो गई। उसने घर से कभी बाहर कदम भी नहीं निकाला था। पति के बाद उसे लगा जैसे उसकी दुनिया ही उजड़ गई।

उसका ससुर अच्छा आदमी नहीं था। घर में जवान विधवा बहू पाकर उसकी नीयत खराब हो गई। भगवती किसी हालत में भी अपनी ससुराल में रहना नहीं चाहती थी। मां बाप के घर आने में भी हिचकिचाहट थी। कुछ दिन की बात हो तो आते अच्छा लगता है। यह तो जिंदगी भर का सवाल था। भाभियां क्या कहेंगी यह सोचकर वह अपने ससुराल की बुराई नहीं करना चाहती थी। कुछ महीने और बीत गए लेकिन भगवती और न सह सकी। एक दिन बच्चों को लेकर पीहर आ गई।

माता-पिता ने जब उसकी बात सुनी तो फैसला किया कि उसे ससुराल नहीं भेजेंगे। तब उन्हें उसके अनपढ़ होने पर दुःख हुआ। बेचारी क्या कर सकती थी! भगवती ने अपना दिल छोटा नहीं किया। उसका भाई मंडी से सब्जियां भगवती के लिए ले आता। वह गांव में सब्जियां बेचती। जो पैसे बचते भाई उसे जमा करने को कहते। भाभियां बच्चों को प्यार से पालतीं और भगवती को कभी महसूस न होने देतीं कि उस पर एहसान हो रहा है।

गांव में ही प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र था। एक दिन भगवती वहां पहुंच गई। वह दिन जैसे उसकी जिन्दगी का नया दिन था। उसने दृढ़ निश्चय किया कि वह पढ़-लिखकर अपने पैरों पर खड़ी होगी। वह पूरे मन से पढ़ाई में जुट गई। पढ़ाई के साथ-साथ सिलाई भी सीखने लगी।

शाम को टोकरी लिए गांव में सब्जियां बेचती। उसे पढ़ता देख गांव के कई निरक्षरों को भी प्रेरणा मिली। तीन वर्ष में ही अनपढ़ भगवती ने पांचवीं की परीक्षा पास की। अब वह पढ़ाई में अपने बच्चों से कहीं आगे निकल गई। चौथी में पढ़ रहे बेटे की भी मदद करने लगी।

भगवती ने महरौली ग्राम स्वास्थ्य केन्द्र से कार्यकर्ता बनने के लिए एक वर्ष का प्रशिक्षण लिया। एक संस्था ने उसे प्रशिक्षण पाने के लिए प्रति माह वजीफा भी दिया। उसके काम से सभी बहुत खुश थे। जिस केन्द्र में उसने प्रशिक्षण लिया वहीं पर उसे नौकरी भी मिल गई।

आजकल भगवती को गांव में सभी आदर से देखते हैं। वह टीका (इंजेक्शन) भी लगा लेती है। पत्राचार से आठवीं की तैयारी भी कर रही है। अंग्रेजी भाषा सीखने की कोशिश कर रही है। उससे प्रेरणा लेकर कई लोगों ने पढ़ना शुरू किया है। उसकी अपनी भाभी भी प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र में जाने लगी है।

चोरी

रोज की तरह बहनजी ने बस पकड़ी। वह गांव के सेंटर जा रही थीं। जब बस गांव के करीब पहुंची, तो उन्होंने गांव के प्रधानजी को देखा। प्रधानजी ट्रैक्टर में बैठ गांव की ओर जा रहे थे। उनके साथ पुलिस थी। बहनजी को आश्चर्य हुआ। इस गांव में किसी न किसी कारण पुलिस आती ही रहती थी।

जब बहनजी बस से उतरीं—तो गांव में अजीब-सी उदासी सी छाई हुई थी। रात को चार घरों में चोरी हो गई थी। किसी को पता नहीं चला था। जंतपुर के नाम से ही आस-पास के गांवों के लोग डरते थे। ऐसे गांव में एक नहीं, चार घरों में चोर आए थे। सारा गांव सोता रह गया था। सबको आश्चर्य और दुःख हो रहा था।

गांव में नया गुरुद्वारा बना था। ज्ञानी जी रोज की तरह सुबह जंगल गए थे। वहां उन्हें कुछ कपड़े और चीजें खेत में बिखरी हुई मिलीं। उनका माथा ठनका। उन्होंने प्रधान जी को बुलाकर दिखाया। गुरुद्वारे जाकर सारे गांव को सूचना भेजी गई। सुबह के चार बजे थे। सब लोग घबराकर गुरुद्वारे की तरफ भागे। दूसरों का दुःख सुनाने और जिनके घर चोरी हुई थी, उनका दुःख सुनने। चार घरों में चोरी हुई। और चोर बचकर चले गए!

बहन जी सेंटर में पहुंचीं। वहां भी खामोशी और उदासी थी। गांव में लोग एक-दूसरे से ईर्ष्या-द्वेष करते हैं, लेकिन दुःख में सब एक-दूसरे के साथी और हमदर्द हैं। बहन जी उनका दुःख समझती थीं। जब उन्हें पता चला कि करतारी के घर भी चोरी हुई है, तब तो उनका कलेजा मुंह को आ गया। बेचारी विधवा! उसका इकलौता जवान बेटा अभी कुछ महीने पहले ही तो चल बसा था। दो दिन पहले ही तो वह सेंटर में आई थी और मशीन के पैर बेचकर सौ रुपये बहन जी से ले गई थी। वह रकम भी चोरी हो गई।

बहन जी उसके घर गईं। वहां पहले से ही कुछ लोग बैठे हुए थे। अन्दर गईं, तो बेचारी दुखिया को देखकर उन्हें समझ न आया कि क्या कहें। दूसरी औरतें और सेंटर की लड़कियां भी बैठी थीं। सब चीजें बिखरी पड़ी थीं। पास में बेटी चुपचाप बैठी थी; उसकी शादी को अभी

साल भी नहीं हुआ था। भाई के मरने की खबर सुनकर मां के पास आई थी। सारे गहने उतारकर सन्दूक में रख दिये थे। भाई का दुःख और गहनों की चमक ? आते ही गहने उतार दिये थे–चोर उन्हें भी ले गए।

एक रूमाल में बांधकर सारे पैसे रखे थे–सभी चले गए। करतारो का भाई खेत में रहता था। यह सोचकर कि गांव में पैसे ज्यादा सुरक्षित रहेंगे, बहन को अभी कुछ दिन पहले ही सारे पैसे दे गया था। पूरे एक हजार रुपये थे। सभी चले गए।

एक कमरे की कोठरी और फूस की एक छत। लेकिन अभागिन के पास अपना और दूसरों का काफी पैसा और गहना था। सब चोरी हो गया।

पैसा-गहना लेकर सन्दूक को खाली करके चोर लड़के की फोटो कपड़ों पर रखकर किस बेदर्दी से चले गए ! बाहर सो रहे लोगों को पता तक न चला ! अन्दर किवाड़ बन्द करके चोर कितने आराम से छानबीन कर रहे थे।

बाहर बैठे पुरुष दुःख के समय सोच रहे थे। कितनी बड़ी भूल थी जो इतना पैसा गहना घर में रखा। यही किसी बैंक में रखे होते, तो आज क्या बेचारी को यह दिन देखना पड़ता ? गांव में बैंक भी तो नहीं है, लेकिन आज तक कभी इसकी जरूरत भी तो महसूस नहीं हुई।

सब ने सलाह दी कि पास के गांव या शहर जाकर पता करेंगे कि गांव में बैंक की शाखा खुल सकती है या नहीं।

एक बोला, "आजकल तो सुना है, सरकार गांव-गांव में बैंक खोल रही है।"

दूसरे घर में चोरी हुई। चोरों ने वहां बिना समय बर्बाद किए गेहूं की कोठी को खोला। वहां रखे हुए डिब्बे में से सारे पैसे निकाल लिए। ऐसा तो कई घरों में होता है।

इस दुःख की घड़ी में सब सोच में थे। आगे क्या किया जाए कि दुबारा यह दिन न देखना पड़े।

बहन जी सेंटर में आईं। वहां संतों ने तीसरे घर की चोरी के बारे में बताया। सब लड़कियां ध्यान से सुन रही थीं।

गांव में रात के समय पुलिस का पहरा लगता है। जो भी सड़क पर दस बजे के बाद दिखाई देता है, पुलिस उसे पकड़कर ले जाती है। शराब बनाना, बेचना, और पीकर बुरे काम करना, मार-पीट करना इस गांव में होता ही रहता है। इसीलिए अब पुलिस का पहरा लगना शुरू हुआ है।

चम्पा की शादी हुए कुछ महीने ही हुए थे। वह कानों में भारी झुमके पहने हुए थी। पति के साथ घर के आंगन में सो रही थी। सास ऊपर की मंजिल में थी। रात को उसे लगा–जैसे किसी ने उसका कान खींचा हो। चीख कर उठी। पति को बताया, लेकिन उसने डांटकर उसे चुप

करवा दिया। कोई बुरा सपना देखा होगा। बेचारी चुप करके लेट गई। थोड़ी देर में फिर चिल्लाई–"देखो, देखो मेरा कान, मेरा कान···!"

कोई अंधेरे में उसके कान से खींचकर झुमका ले गया। और वह सपना नहीं था। वह रोने लगी।

सास ने उठकर देखा। कान से खून बह रहा था। उसने शोर नहीं मचाया–जो जाना था, चला गया। अब चिल्लाकर क्या होता है जब चिड़िया चुग गई खेत!

सवेरे लोगों ने उन्हें डांटा-दुत्कारा। अगर रात को शोर मचा देते, तो शायद बाकी की चोरियां न होतीं। चोर पकड़े जाते। शराब के नशे में चूर पति करता भी तो क्या? उसे तो अपनी भी सुध नहीं थी।

अगले दिन शाम के समय पड़ोस के गांव का एक आदमी जैतपुर से निकल रहा था। कुछ लड़कों को उस पर शक हुआ। उस बिचारे की पिटाई कर दी। टांग टूट गई और वह जख्मी हो गया।

सुजान ने बहुत समझाया कि कानून को अपने हाथ में न लो। खुद मार-पीट करने की जगह उसे पुलिस के हवाले कर दो। लेकिन गुस्से और शक ने तो लड़कों को जसे पागल ही बना दिया था। कुछ सुनना ही नहीं चाहते थे।

बाद में पता चला कि उस गांव वालों ने जख्मी को

थाने ले जाकर जैतपुर के लड़कों की शिकायत कर दी। पुलिस उन्हें पकड़ कर ले गई। चोरों का तो पता नहीं चला; ऊपर से लड़कों के जाने से गांव वालों का दुःख और भी बढ़ गया।

इस एक दुर्घटना से तीन बातें सामने आईं—एक, कि रुपया-पैसा घर में नहीं रखना चाहिए। दो, कि कानून को अपने हाथ में नहीं लेना चाहिए। तीन, कि शराब नहीं पीनी चाहिए। शराब में बेहोश होने से चम्पा के पति ने चम्पा की बात नहीं सुनी और वह बेहोश होकर सोता रहा।

नन्हे दुश्मन

छोटे से गांव में रहती थी भोली-भाली गौरी। देखने में सुन्दर और स्वभाव से बिलकुल शान्त। उसकी उम्र की लड़कियां पढ़ने जातीं और खेलती-कूदतीं, लेकिन गौरी घर के कामों में व्यस्त रहती। बचपन तो जैसे उसने देखा ही न हो। छोटे भाई बहनों की देखभाल करती और मां के साथ घर और खेत पर काम करती।

गौरी पांच वर्ष की थी तो उसके मां-बाप ने अपनी जाति के परिवार से उसका रिश्ता कर दिया। बारह वर्ष की उम्र में ही वह अपने ससुराल चली गई। उसका सत्रह वर्षीय पति काम के लिए शहर में रहता था और गौरी ससुराल में। वहां भी वह घर और खेत पर काम करती। और सास-ससुर के सामने उसकी बोलने की हिम्मत न

होती। गांव में लोग कहते कि छोटी उम्र में विवाह होने से लड़कियां ससुराल के तौर-तरीके सीख जाती हैं। अनपढ़ गौरी किसी से अपने मन की बात न कहती और न ही पत्र लिख सकती।

गौरी का पति नवराज शहर में मेहनत करता। घर जाने के लिए उसके पास पैसे न थे और न ही उसे छुट्टी मिल सकती थी। वह जो पैसे कमाता, सब जोड़कर घर भेज देता। बहुत दिन घर न जाने के कारण गांव में कुछ लोग कहने लगे कि उसने शहर में शादी कर ली है। गौरी मन ही मन बेचैन होती, लेकिन क्या करती ?

अचानक एक दिन नवराज गांव पहुंच गया। घर में सबकी खुशी का ठिकाना न रहा। दिन बीतते पता ही नहीं चला और नवराज के वापस जाने का दिन भी आ गया। गौरी उसके साथ शहर जाना चाहती थी। उसकी सास को यह बात पसंद न थी, क्योंकि वह सारे घर का काम करती थी। ससुर और मां-बाप तो यही चाहते थे कि वह पति के साथ जाकर रहे, ताकि नवराज शहर में भटक न जाए। सास भेजना नहीं चाहती थी। आखिर गौरी का भी मन तो पति के साथ ही था।.....

जिस दिन शहर जाने के लिए नवराज ने सबसे विदाई ली, गौरी ने कुछ नहीं कहा। उसने मन-ही-मन में ठान लिया था कि वह अपने पति के साथ शहर जरूर जाएगी। जब वह घर से निकला तो गौरी नंगे पैर चुपके से उसके पीछे-पीछे चलती रही। घर से बस का अड्डा

काफी दूर था। नवराज जब बस में बैठने लगा तो गौरी प्रकट हो गई और साथ जाने की जिद करने लगी। बहुत समझाने पर भी नहीं मानी। कहने लगी कि ससुर को मालूम था, लेकिन पत्नी के डर से उसने चुप रहना ही ठीक समझा। गौरी किसी तरह भी वापस जाने को तैयार न थी। पति के साथ बिना कुछ लिए ही शहर पहुंच गई।

शहर में आकर गौरी अपने पति के साथ मौज-मस्तियों में डूबकर जीवन का आनन्द लेने लगी। पति काम पर जाता और वह दिन भर आराम करती। इतना आराम तो उसने जीवन भर न किया था। कुछ दिनों बाद उसकी तबीयत जरा ढीली होने लगी। जी मचलाता और उसे थकावट भी महसूस होती। डाक्टर ने जांच की तो पता चला कि वह मां बनने वाली है! खून, पेशाब वगैरह की जांच हुई। पता चला कि उसमें खून की बहुत कमी थी। सेंटर की डाक्टरनी ने उसे तुरन्त हस्पताल में दाखिल करने की सलाह दी। एक सप्ताह रोज टीके लगे और गौरी घर आ गई।

गौरी का चेहरा पीला दिखाई देता और अपनी थकान की बात वह किसी से न कहती। गर्भवती मां के मुंह पर जो रौनक और उल्लास होता है, वह उस पर नहीं था। उसकी तो थीं धंसी आंखें और पीला चेहरा।

एक दिन उसकी पड़ोसन उसे बड़े हस्पताल ले गई। पता चला कि टीके लगने के बाद भी उसमें खून की बहुत कमी थी। उसके पेट में कीड़े थे, जिनके कारण उसके शरीर

में खून की कमी थी। कीड़े मारने की दवा गर्भावस्था में नहीं दी जाती, इसलिए उसे खून की कम से कम दो बोतलें चढ़ानी पड़ेंगी। उसे हस्पताल में दाखिल कर दिया गया और खून के लिए दौड़ धूप शुरू हुई।

उसका दुबला पतला पति खून देने के लिए गया तो डाक्टर ने उसका भार तोलने के बाद कहा कि वह खून नहीं दे सकता। कोई भी व्यक्ति, जो 17 से 60 वर्ष की उम्र का हो, खून दे सकता है। यदि वह स्वस्थ हो तो तीन महीने बाद फिर वह खून दे सकता है। खून देने से कमजोरी नहीं होती और आराम करने की जरूरत भी नहीं रहती।

गौरी की पड़ोसन ने खून दिया। उसका खून गौरी के मेल का नहीं था, इसलिए उस खून के बदले रक्त बैंक से दूसरा खून गौरी को चढ़ाया गया। खून के कई ग्रुप होते हैं और व्यक्ति को सिर्फ उसी के मेल के ग्रुप का खून ही चढ़ाया जा सकता है।

एक सप्ताह हस्पताल में रहने के बाद गौरी घर आ गई। खून मिलने से उसके चेहरे पर रौनक आ गई थी। कुछ दिनों बाद उसकी नन्हीं सी गुड़िया पैदा हुई। गौरी ने निश्चय किया कि अगले बच्चे में जल्दी नहीं करेगी और पेट के कीड़ों की दवाई जरूर लेगी।—उसे क्या पता था कि नन्हे-नन्हे कीड़े भी गर्भावस्था में इतना तंग कर सकते हैं!

आप निम्न प्रश्नों पर विचार करें :-

1. गौरी को खून की कमी क्यों थी ?

2. रक्तदान कौन कर सकता है ? एक समय में कितना रक्त दान में लिया जाता है ? रक्तदान कहां किया जा सकता है और कैसे होता है ?

3. एक के बाद दूसरे बच्चे के जन्म के बीच कितना अंतर होना चाहिए ?

आरोप

मुनेष का विवाह बड़ी धूमधाम से हुआ। उसका पति दसवीं की परीक्षा देने की तैयारी कर रहा था लेकिन गांव में पढ़ाई को बाधा न समझते हुए मुनेष का गौना भी हो गया। ससुराल में केवल तीन दिन रहने के बाद वह मायके आ गई। सास ने बेटा बहू को दूर रखने की कोशिश की लेकिन जवानी का नशा और शादी का उत्साह रंग लाया। मायके आकर उसे पता चला कि उसके पैर भारी हो गये थे।

गर्भवती मुनेष जब ससुराल गई तो ससुराल वालों ने उस पर आरोप लगाया कि वह चरित्रहीन है और किसी और का पाप लिए हुए है। पन्द्रह वर्षीय मुनेष की बात का किसी ने विश्वास न किया। उसके पति ने भी उसका साथ नहीं दिया। सास ससुर ने कहा कि बच्चे को पैदा

होने न दिया जाये और निकलवा दें किन्तु मुनेष और उसकी मां न मानी।

सातवें महीने में मुनेष जिद करके मायके आ गई। वहां उसका समय से पूर्व ही बच्चा हो गया। अब तो ससुराल वालों ने कहा कि वह विवाह के समय ही गर्भवती थी अतः उन्होंने उसे स्वीकार करने से इनकार कर दिया।

दिन और महीने बीतने लगे पर मुनेष को लेने उसके ससुराल से कोई नहीं आया। एक दिन उसका ससुर अपने भाई के साथ बच्चे को देखने आया। मुनेष के पिताजी और ताऊ जी की आपस में बनती नहीं थी और इर्ष्या अगली पीढ़ी में भी पहुंच गई थी। ताऊ की बहुओं ने कह दिया कि वास्तव में बच्चा विवाह से पहले का था। बस इतना कहना ही आग लगने की तरह था। इसके बाद तो ससुराल वाले उसे बिलकुल भी ले जाने को तैयार नहीं थे।

गांव में औरतों का सेंटर था जहां बहन जी से सब लोग दुःख-सुख की बातें करते। मुनेष की बहन ने अपनी बहन की परेशानी बताई और बहन जी से आग्रह किया कि वह बीच में पड़ें।

सेंटर से जुड़ी संस्था के सदस्यों ने निश्चय किया कि वे मामले को सुलझाने का प्रयत्न करेंगी। बहुत सोच-विचार करने के बाद वे गांव की कुछ महिलाओं को लेकर मुनेष की ससुराल गईं। बहुत सब्र से उनकी पूरी बात

सुनी और उन्हें समझाया कि वे अपनी बहू को बच्चे के साथ अपना लें। यदि यह मामला कचहरी में गया तो दोनों पक्षों से पूछा जायेगा कि जब लड़की की उम्र 18 और लड़के की उम्र 21 वर्ष की नहीं थी तो यह विवाह क्यों किया गया। इसे गैर कानूनी भी कहा जा सकता है। ससुराल वाले बहू को ले जाने को तैयार हो गये। ऐसा प्रतीत हुआ मानों समस्या का समाधान हो गया हो।

सुनेष बेसब्री से ससुराल जाने की राह देखने लगी। एक महीना निकल गया लेकिन न कोई खबर आई न ही कोई लेने आया। मामले की जांच करने के लिए एक दिन समाज सेविका कृष्णा बहन जी ने सुनेष को उसके बच्चे के साथ अपने घर बुलाया। प्रश्नोत्तर के बाद कृष्णा जी को विश्वास हो गया कि वास्तव में बच्चा सुनेष के पति से ही था। उसकी शक्ल भी अपने पिता से मिलती थी। सुनेष सब के सामने और कचहरी में भी कहने को तैयार थी कि उसने पति को सावधान भी किया था किन्तु वह माना नहीं था। माता-पिता के सामने एक बार कह दिया कि वह पत्नी से मिला नहीं अतः अब दुबारा कुछ कहने की उसकी हिम्मत नहीं थी।

बहन जी सुनेष के भाई को लेकर उसके ससुराल गई। सास-ससुर ने आदर सहित बैठाया। संस्था की गाड़ी देखकर गांव वाले पूछने लगते हैं कि किसके घर कौन आया है और क्यों ? इसका गांव में बहुत प्रभाव

पड़ता है। सुनेष के ससुर कहने लगे कि उन्हें बहू को लाने में कोई आपत्ति नहीं है लेकिन उनका लड़का ही तैयार नहीं है। बिना मर्जी के वे कैसे ला सकते हैं! ससुर का रोब और बात करने के ढंग से कोई भी आसानी से जांच सकता था कि वास्तव में यह न लाने का बहाना ही था।

सुनेष की ननद भी वहीं थी। बातों-बातों में पता चला कि वह कई वर्षों से मायके में रह रही थी। ससुर ने बताया कि उसका पति चरित्रहीन है। अतः वे ही उसे ससुराल नहीं भेजते। बहन जी ने हंसकर कहा, "आपकी बहू और दामाद दोनों में खोट है। आपकी बेटी और बेटा दोनों ही अच्छे हैं।" बहू के बारे में सास कहने लगी कि वह अपने मायके में पड़ी रहे। हमारी बेटी भी तो अपने मायके में है। बहन जी को यह बात बहुत अजीब लगी। उन्होंने कहा, "शादी के बाद लड़की ससुराल में ही अच्छी लगती है। वैसे बेटी मां-बाप के घर खुशी से जितने दिन रहे अच्छा है, लेकिन यदि बेटी को कोई दुःख हो तो उसका उपाय करना मां बाप का फर्ज है।" बहन जी ने उस समय कुछ कहा नहीं, लेकिन उन्हें दाल में कुछ काला नजर आया।

बातों-बातों में ससुर ने बताया कि सुनेष के दूसरे भाई को बुलवाया जाये जो कि फौज में काम करता है। वह सुनेष के पति को राजी करवा सकता है। बाद में दूसरे भाई को, जो साथ में गया था, पता चला कि फौजी

भाई लड़के को मोटर साइकिल देने की बात कह गया था। शायद मामला इसीलिए दबा हुआ था। लेने-देने की बात साफ-साफ कहने को कोई तैयार नहीं था।

आदर सहित ससुराल वालों ने बहन जी को भरोसा दिया और कहा कि बिना कचहरी गए ही दोनों परिवारों के बीच फैसला हो जायेगा, उन्हें कष्ट करने की जरूरत नहीं।

बाद में पता चला कि मुनेष की ननद को उसके ससुराल वालों ने निकाला था क्योंकि उस पर चरित्रहीनता का आरोप लगाया गया था। पता चला कि वह देवर के साथ पकड़ी गई थी और देवर ने उसके पति को मारा था। तब से वह मायके में ही है।

आप निम्न प्रश्नों पर विचार करें :–

1. शादी की सही उम्र क्या है ? छोटी उम्र में विवाह के परिणाम क्या होते हैं ? छोटी उम्र के पति-पत्नी क्या सही निर्णय ले सकते हैं ?

2. छोटी उम्र में विवाह करने पर यदि समस्या हो तो काननी कार्यवाही करनी चाहिए या नहीं ? इसके क्या परिणाम हो सकते हैं ?

3. दहेज देने या लेने की बात स्पष्ट रूप से कोई नहीं कहता लेकिन इसके कारण लड़की पर आरोप लगाये जाते हैं। आप इसके बारे में क्या सोचते हैं ? मामले का निपटारा करने के लिए मुनेष के भाई को मोटर साइकिल देनी चाहिए या नहीं ?

4. जब बेटी पर चरित्रहीनता का आरोप हो तो बहू के साथ भी ऐसा ही व्यवहार किया जाता है। आप इससे सहमत हैं ?

आत्म-सम्मान

कमला गरीब मां बाप की बड़ी लड़की थी। बाप मजदूरी करता और बीमार मां घर का कामकाज करती। सात बच्चों की देखभाल करने में कमला मां का हाथ बंटाती। छोटे भाई बहन तो स्कूल गए लेकिन कमला की किस्मत में पढ़ाई कहां ? छोटी उम्र से ही उसने अपने घर की जिम्मेदारी उठा ली थी।

कमला का विवाह बहुत धूमधाम से हुआ। उसके भाई का विवाह उसकी ननद के साथ हुआ। दोनों परिवार दोहरे रिश्ते से बंध गए। राज का ससुर नहीं था। सास और दो ननद बहुत ही तेज थीं। विशेषकर राज की भाभी ! बड़ी बहू होने के कारण कमला पर बहुत

जिम्मेदारी थी। उसका पति गणेश मां की बात टाल नहीं सकता था। मां सदैव उसे राज के खिलाफ भड़काती रहती। कमला कुछ न कहती। एक वर्ष बाद उसका बेटा हुआ। आठ दिन बाद ही वह काम करने लगी। उसकी छाती पर फोड़ा हो गया जो इलाज न करवाने के कारण बहुत बढ़ गया। जब कमला की मां उससे मिलने आयी तो उससे बेटी की हालत देखी न गयी। वह उसे अपने साथ ले आई। सही भोजन न मिलने के कारण कमला सूख गई थी। उसका पति परेशान था किन्तु कुछ करने में असमर्थ था। इस बीच उसके भाई का विवाह भी हो गया और वह अपने ही घर में मेहमान-सा हो गया।

गणेश ने कुल्फियां बेचनी शुरू की। मां का घर छोड़-कर वह ससुराल आ गया। वह बहन के पास रहने लगा। कमला की भाभी जो ननद भी थी, उसे मिलने न देती। स्वयं भी सास ससुर से अलग रहती थी। जितना पैसा गणेश कमाता उसे अपनी मां को दे देती।

कमला में बहुत आत्म सम्मान था। वह अपने मां बाप के घर रहना नहीं चाहती थी। एक कमरा किराए पर लेकर रहने लगी और घरों में काम करके, बुनाई करके अपना और अपने बच्चों का पेट पालने लगी। उसका पति उसके पास रहने लगा। एक दूकान किराए की लेकर चाय बनाने लगा। चाय की दूकान से उसे अच्छी कमाई होने लगी। वह रोज राज को पैसे लाकर

दे देता। कभी उससे हिसाब न मांगता। कमला बिलकुल फिजूलखर्च न करती और पैसे जोड़ती भविष्य के लिए। जब आदमी काम पर चला जाता तो बिना बताए कुछ घरों में काम कर आती। अब उसके दो और बच्चे हो गए। तीन बच्चों के बाद उसने 'आपरेशन' भी करवा लिया।

कमला का गृहस्थ जीवन सुख से बीत रहा था। पति काम करता और पैसे पत्नी को लाकर देता रहा। सुरजीत की मां और भाभी उसे सुखी न देख सके। उन्होंने सुरजीत को भड़काया कि कमला उसके खून-पसीने की कमाई का पैसा अपने मां-बाप को देती है। वह शराब पीने लगा और कमला को मारने लगा।

एक दिन जब गणेश ने राज को बहुत पीटा तो उसने घर छोड़ने का फैसला कर लिया। बिना कुछ कहे वह चार किलोमीटर पैदल चलकर स्टेशन पहुंची। उसे पता नहीं था कि वह क्या करना चाहती है। और कहां जाना चाहती है। बिना टिकिट लिए गाड़ी में बैठ गयी। अचानक गाड़ी चलने से पहले उसे ख्याल आया कि उसके पास तो टिकिट के पैसे भी नहीं हैं। बच्चों के मोह ने उसे जाने से रोक दिया। रोती-रोती अपनी पड़ोसन के घर आयी। मां और भाभी को पड़ोसन ने बुलवाया। उन्हें समझाने की कोशिश की लेकिन वो तो कुछ सुनने को तैयार न थी। राज ने कहा कि वह घर तभी जायेगी यदि उसका पति

प्रण करे कि वह शराब नहीं पिएगा। सास तुनक कर बोली, "नहीं आती तो न आये, मेरा बेटा तो जो जी में आयेगा करेगा।"

गणेश को अपनी गलती का एहसास हुआ। पड़ोसन ने बताया कि कमला ने पैसा जोड़कर बैंक में रखा है। कुल 'दस हजार' रुपए जमा हो गए थे। राज ने पति को बताया तो उसकी खुशी का ठिकाना न रहा। उसने तो कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि इतने पैसे जमा हो सकेंगे।

कमला ने पति को कहकर अपना घर बनवा लिया और एक हिस्सा किराए पर दे दिया। चाय की दूकान की जगह अब ढाबा खोल लिया। वह स्वयं बच्चों के साथ ढाबे पर पति के साथ काम करती। तीन घरों में भी सुबह-सुबह काम करके रुपए कमा लेती। वह अपने बच्चों को पढ़ा रही है और उनके लिए सपने देखती है। सास से अलग रहती है। उसकी इज्जत करती है। भगवान से प्रार्थना करती है कि उनकी बुद्धि ठीक रखे ताकि वह उसकी जिन्दगी में दखल न दें। खामोश रहकर आत्म-सम्मान से जीने के लिए उसने हिम्मत और धैर्य को कभी न छोड़ा।

आप निम्न प्रश्नों पर विचार करें :-

1. गरीबी में और बड़े परिवारों में पलने वाले बच्चों की क्या दशा होती है ? इसका सबसे अधिक असर किस पर होता है ?

2. लड़की को शादी के बाद अपने मां-बाप की पैसे से मदद करना क्या बुरी बात है ?

3. पति से पूछे बिना परिवार नियोजन के लिए ऑपरेशन करवाना क्या गलत है ?

4. आदमी की शराब की आदत छुड़वाने के लिए क्या किया जा सकता है ?

5. आदमी औरत पर हाथ क्यों उठाता है ? उसे क्या करना चाहिए ?

कोशिश

सेंटर में सभी खुश थे क्योंकि सरोज का पहला लड़का हुआ था और सब लड्डू खा रहे थे। सेंटर बीस औरतों का अपना परिवार—जैसा ही बन गया। सब साथ मिलकर काम करतीं। एक-दूसरे के सुख-दुःख में साथ देतीं। जब भी किसी सदस्य के घर बच्चा होता तो सेंटर की बहन जी शनो देवी से ही नवजात शिशु के मुंह में जन्मघुट्टी दिलवाई जाती, क्योंकि सभी बहन जी से प्यार करते थे और उनकी इज्जत भी करते थे।

उस दिन जब मंजु और मृदु सेंटर में आयीं तो उन्हें पता चला कि सरोज के लड़का हुआ है। उन्हें बच्चे को देखने तो जाना ही था। सेंटर में होकर वे सरोज के घर गयीं। उन्हें चाय लड्डू दिए। घर में खामोशी छाई हुई

थी और खाट पर एक कोने में सरोज अपने लड़के के साथ लेटी हुई थी। घर में बिलकुल भी खुशी न थी। पहला बच्चा, वह भी लड़का, तो भी खुशी नहीं। बड़ा आश्चर्य हुआ मंजु और मृदु को। दोनों ने एक दूसरे की तरफ देखा और कुछ जानने की कोशिश की। अभी चाय खत्म भी न हुई थी कि सरोज की ननद गिड़गिड़ाती हुई कहने लगी—"आप ही कुछ कर सकती हैं, जिससे इस बच्चे के बाप को बचा लें।" देखा तो साथ के कमरे में सरोज का चौबीस वर्षीय पति सरजीवन लेटा हुआ था। बेहद कमजोर और पीला। चारपाई के नीचे एक तसले में रेत थी, जिसमें वह थूकता था। सरोज की ननद ने बताया कि उसका भाई तपेदिक से पीड़ित था। उसका बाप और ताऊ तपेदिक से ही मरे थे, अतः सरजीवन का मरना भी पक्का ही है।।''' यह सोचकर कि मौत के मुंह में जा रहा है, घर में अजीब तरह की उदासी थी।

मंजु और मृदु ने एक दूसरे को देखा—परिवार में तपेदिक जो कि शायद छूत की बीमारी है, सामने मरीज पड़ा है। उनके हाथ में चाय और लड्डू—न छोड़ी जाए न पी जाए। दोनों ने एक-दूसरे को कुछ न कहा पर सोच लिया कि इस परिवार के लिए जो कुछ कर सकेंगे, करेंगे। तुरन्त उसके एक्स-रे और हस्पताल की परची ली। मंजु दिल्ली जाते ही डाक्टर से मिली। पता चला कि उसे छूत की तपेदिक है। उसका एक फेफड़ा बुरी तरह खराब है और उसे तुरन्त हस्पताल में भरती होना

चाहिए।

घर के सभी सदस्यों को एक्स-रे करवाने को कहा गया, लेकिन आदमी लोग न माने। हां, बच्चों और औरतों को एक्स-रे करवाने भेजा गया।

सरजीवन को हस्पताल में दाखिल करने के लिए बहुत कोशिश की, लेकिन वह तो घर में ही मरना चाहता था! उसने तो जैसे इसकी तैयारी ही कर ली थी। उसे समझाना मुश्किल था। उसे आधुनिक विज्ञान के चमत्कारों की प्रेरणा दी गई कि इन्सान को हिम्मत नहीं हारनी चाहिए। किसी तरह वह मान गया और महरौली के तपेदिक हस्पताल में दाखिल हो गया। तपेदिक की बीमारी का इलाज कई दिन तक चलता है, अतः सब्र से काम लेना पड़ता है। सरजीवन हस्पताल में जाता और घर आना चाहता। उसकी मां हस्पताल में शनो बहन जी को ले जाती—समझाने के लिए।.....

सरोज भी बच्चे को लेकर हस्पताल जाती रहती। उसकी सास चाहती कि वह अपने मायके चली जाए ताकि उसका बेटा घर आने को आतुर न हो। उधर सरोज अपने पति को छोड़ना नहीं चाहती थी। उसका कहना था कि वह बच्चे को इसलिए ले जाती है कि उसका पति धमकी देता है कि उसने बच्चे को न देखा तो वह घर आ जाएगा और बच्चे के पीछे उसके मायके भी चला जाएगा।

एक दिन बिना डाक्टर की सलाह लिए ही सरजीवन

घर भाग आया। दो महीने हस्पताल में रहकर वह तंग आ गया था। सबने उसे बहुत समझाया, पर वह वापस उस हस्पताल में जाना नहीं चाहता था। अब किस मुँह से वापस जाए।

बहुत सोच-विचार कर एक प्राइवेट डाक्टर को दिखाया गया। पता चला कि उसका एक फेफड़ा बिलकुल खराब हो गया था और उसे आपरेशन करके निकालना होगा। रोटरी क्लब वालों से इस काम में मदद लेने के लिए बात की गई। आखिरकार क्लब वालों ने फैसला किया कि इसके लिए वे सब पैसा देंगे और उसका इलाज करवायेंगे। लेकिन मुसीबत यह थी कि सरजीवन ही तैयार न था! समय बीत रहा था। सरजीवन की हालत खराब हो रही थी और उसका बेटा अब छह माह का हो गया था।

सरोज और सास परिवार वालों से पूछे बिना कुछ न कर सकती थीं। लोग यही कहते कि सरजीवन को तो अब भगवान के भरोसे छोड़ दो। कोई पीर बाबा के पास ले जाता मगर आपरेशन की सलाह कोई न देता। शनो बहन जी ने भी परिवार के लोगों को समझाया, पर कुछ असर नहीं हुआ। फिर अचानक सास-बहू ने हिम्मत करके फैसला किया कि उसका आपरेशन करवा दें। जो होना है वह तो होगा ही, लेकिन हमें तसल्ली होगी कि हमने अपनी पूरी कोशिश की। एक बार फैसला करने पर तो उनके दिन गुजरने मुश्किल हो गए। प्रतिदिन टेलीफोन पर पुछवाया जाता कि आपरेशन कब होगा।

पहली जुलाई को सरजीवन का आपरेशन हुआ। गांव से बहुत से लोग हस्पताल सुबह से ही आए हुए थे। उसकी बहन भी तीन सप्ताह के छोटे बच्चे को लेकर पति की साईकिल पर बैठकर हस्पताल आई। डाक्टर ने रोगी के लिए खून मांगा, लेकिन कोई भी खून देने को तैयार न था। मंजु ने दृढ़ता से कहा कि इतने लोगों के होते उसे खरीदकर खून नहीं दिया जाएगा। वह स्वयं खून देने को तैयार हो गई। यह देखकर गांव वालों को शर्म आयी और कई लोग तैयार हो गए। सबसे पहले सरजीवन के ताऊ के दामाद ने खून दिया। बाद में पता चला कि रात को गांव में बहुत लड़ाई हुई। सरजीवन का पिता और ताऊ आपस में लड़ते थे। उनके मरने के बाद उनके घरों में भी लड़ाई है। सरजीवन की ताई इस बात से नाराज थी कि सारे गांव के लोग मर गए थे क्या जो उसके दामाद का खून लिया गया! गांव में एक बूंद खून देने के लिए कोई भी तैयार नहीं होता।

सरजीवन का आँपरेशन ठीक हो गया और वह धीरे-धीरे खाने-पीने लगा। कुछ दिनों बाद उसका चलना-फिरना भी शुरू हो गया। फिर वह अपने काम पर भी जाने लगा। गांव में खुशी छा गई। सरजीवन के घर पर कथा करवायी गई। बहन जी, कालेज और क्लब के लोगों को भी बुलाया गया। गांव के लोग उनके बहुत आभारी थे और वे देवतास्वरूप माने जाने लगे। शनो बहनजी की इज्जत तो और भी बढ़ गयी!.....

दिवाली से दो दिन पहले सरजीवन की हालत बिगड़ने लगी। उसने दवाई खानी बन्द कर दी थी। उसकी मां दोनों हाथों में लेकर सारी दवाइयां दिखाने लगीं। डाक्टर ने अलग-अलग दवाई दी थी। सुबह-शाम खाने की, खाली पेट और खाने के बाद खाने की; लेकिन इसका कोई ध्यान नहीं रखा गया। उसकी बीवी को भी मायके भेज दिया था सास ने, ताकि परहेज करने से उसकी ताकत बनी रहे।

फिर एक दिन बस सरजीवन चल बसा! अचानक गांव के लोगों के विचार बदले। वे शनो बहन की टांगें तोड़ने की धमकी देने लगे।

कालेज की लड़कियां जब अफसोस करने के लिए सरोज के घर गयीं तो औरतें कहने लगीं कि सरजीवन का आपरेशन करके उसकी जगह प्लास्टिक का फेफड़ा लगाया गया था। उसमें जो कुछ सरजीवन खाता, अटक जाता और इसीलिए उसकी मौत हो गयी। उन्होंने कहा कि सारी गोलियां फेफड़ों में ही जमा थीं और डंडे से फेफड़े को तोड़ना पड़ा। इस तरह की और कई अफवाहें सुनने में आयीं। मृदु ने जब पूछा तो पता चला कि सब सुनी-सुनाई बातें थीं। उन्हें समझाया गया कि फेफड़े की बनावट क्या है। उसका काम क्या है और दवाई की गोलियां फेफड़े में जमा होने की बात केवल भ्रम है। सब ध्यान से चुपचाप सुनते रहे। और अन्त में यही कहा कि भगवान के आगे सभी हार जाते हैं और उसका फैसला ही मानना पड़ता है! लेकिन क्या इंसान कोशिश करना भी छोड़ दे? □□□